शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2013

प्रेमचंद की कहानियों में दलित चेतना
(ठाकुर का कुआं और कफन के संदर्भ में)

सुरेश भाई एच.पटेल
हिन्दी विभागाध्यक्ष
एम.एम.चैधरी आर्ट्स कॉलेज
राजेंद्र नगर, भीलोड़ा, उत्तर गुजरात

शोध संक्षेप

भारतीय समाज की संरचना अत्यंत जटिल है। प्राचीन भारतीय समाज में कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था निर्मित की गई थी। व्यवसाय के वरण के आधार पर समाज को चार वर्णों में विभाजित किया गया - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। कालांतर में यह व्यवस्था जन्म पर आधारित हो गई। इसने समाज में शोषक वर्ग और शोषित वर्ग का सृजन किया। जब साहित्यकारों की दृष्टि इस ओर गई, तब उन्होंने अपनी लेखनी से दलितों के दर्द को उभारा। यद्यपि कालजयी कहानियों के रचनाकार मुंशी प्रेमचंद के युग में दलित विमर्श नामकरण नहीं हुआ था, परंतु उनके साहित्य में दलितों के प्रति हुए अत्याचारों का सजीव चित्रण मिलता है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनकी कहानियों में दलित चेतना का अन्वेषण किया गया है।

प्रस्तावना

मानव-मन की जितनी भावनाएं हैं, जितनी विचारधाराएं हैं, जितने दृष्टिकोण हैं, उन सभी को लेकर मुंशी प्रेमचंद ने कहानियां लिखी हैं। उनकी कहानियां वैविध्यपूर्ण हैं।प्रेमचंद ने हमेशा समाज का हित चाहा। इस कारण उनकी कहानियों में विलक्षण आशावाद और अमिट विश्वास देखा जा सकता है। हिन्दी में दलितवादी साहित्यिक चिंतन प्रेमचंद से शुरू हुआ। प्रेमचंद अपने समय के ऐसे लेखक थे, जिन्होंने हिन्दू समाज में व्याप्त भेदभाव की कड़ी आलोचना की। सर्वप्रथम उन्होंने ही साहित्य की दुनिया में दलितों को शीर्ष आसन पर बैठाने का जोखिम उठाया और आजीवन जाति, वर्ण, धर्म, संप्रदाय आदि संकीर्णताओं के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने गहरी संवेदनशीलता के साथ दलितों के जीवन में समाहित अंतरालों को भरने हेतु संघर्ष करते हुए उनकी शक्ति पर असीम आस्था व्यक्त की। इस प्रकार अपने समय और समाज में प्रेमचंद दलित समस्या के सबसे अधिक प्रतिबद्ध प्रत्यक्ष नायक बनकर सामने आए। प्रेमचंद द्वारा रचित साहित्य में दलित संबंधी स्थितियों का वर्णन मिलता है। प्रेमचंद एक ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने पहली बार भारत में नारकीय यातनाएं भोगते दलितों को अपनी कहानियों का विषय बनाया। दलित समस्या को उजागर करने वाली कहानियां लिखीं। वे कहानियां इस प्रकार हैं : ठाकुर का कुआं, कफन, मंदिर, सद्गति, घासवाली, दूध का दाम, आगा-पीछा, शूद्रा आदि।

दलित चेतना

'ठाकुर का कुआं' कहानी में प्रत्यक्ष रूप से दलित समस्या को उठाया गया है। इस कहानी में छुआछूत की समस्या को वर्गगत समस्या से भी जोड़कर देखने का प्रयास हुआ है। तत्कालीन समाज में दलतों की पीड़ित अवस्था का कारण जातिगत दबाव है तो दूसरा कारण ऊंची जाति के लोगों की पूंजी केंद्रित अधिकार लिप्साएं हैं। इस कहानी में प्रेमचंद जी ने अछूतों की शोचनीय परिस्थिति का वर्णन किया है। गंगी दलित होने के कारण ठाकुर के कुएं से पानी नहीं भर सकती। उसका मन पीड़ित होकर सवर्णों की ऊंच-नीच और भेदभाव की धारणा की तीव्र आलोचना करता है। इस संदर्भ में गंगी के आत्मकथन भी उल्लेखनीय है - "हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊंच हैं ? इसलिए कि ये लोग गले में तागा डाल लेते हैं। यहां तो जितने हैं, एक से एक छोटे हैं। चोरी ये करे, जाल-फरेब ये करें, झूठे मुकदमें ये करें। अभी इस ठाकुर ने तो उस दिन बेचारे गडरिए की एक भेड़ चुरा ली थी और बाद को मारकर खा गया। इन्हीं पण्डितजी के घर में तो बारहों मास जुआ होता है। यही साहुजी तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं। काम करा लेते हैं, मजूरी देते नानी मरती है। किस बात में हैं इससे ऊंचे ?"1 उपर्युक्त संदर्भ यह स्पष्ट कर देता है कि दलितों पर एक तो जाति के नाम पर पड़ने वाला दबाव है तो दूसरी ओर पूंजीवादी वर्चस्व की तानाशाही है।

'ठाकुर का कुआं' के जोखू में भी सवर्णों के प्रति आक्रोशमूलक द्वंद्व की प्रतिक्रिया देखी जाती है। तभी तो वह अपनी रुग्णावस्था में भी पत्नी को ठाकुर के कुएं का पानी लाने की मनाही करता कहता है, "हाथ-पांव तुडवा आएगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से। ब्राह्मण देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहूजी एक के पांच लेंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता है। हम तो मर भी जाते तो कोई दुआर पर झांकने नहीं आता, कंधा देने की तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएं से पानी भरने देंगे।"2

प्रस्तुत कहानी में चित्रित गंगी और जोखू की विवषता इसी सामाजिक ऊंच-नीच पर टिकी हुई है। 'ठाकुर का कुआं' शीर्षक ही खुद इस बात को प्रमाणित करता है। यहां कुआं - जिसमें स्वच्छ पानी है, मूल मानवीय अधिकार का प्रतीक है। गंगी और जोखू इस अधिकार से इसलिए वंचित हैं कि कुआं ठाकुर का है। इस पर ठाकुर का कब्जा सांप्रदायिक कीटाणु के फैलाव की स्वाभावित परिणति है। गंगी का विद्रोह उस दयनीय अवस्था का स्वाभाविक चित्रण है।

ठाकुर का कुआं कहानी स्वतंत्रतापूर्व के हिन्दी प्रदेश के गांवों में व्याप्त जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता को व्यक्त करती है। प्रेमचंद के शब्दों में "ठाकुर के कुएं पर कौन चढ़ने देगा ? दूर ही से लोग डांट बताएंगे। साहु का कुआं गांव के उस सिरे पर है, परंतु वहां भी कौन पानी भरने देगा? कोई कुआं गांव में है नहीं।"3

अंत में कहा जा सकता है कि 'ठाकुर का कुआं' कहानी में प्रेमचंद वर्ग विषमता वाले अंतर्संबंधों की एक पूरी दुनिया का यथार्थ हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। एक ओर बीमार जोखू और उसकी पत्नी गंगी है, बीच में सामंती व्यवस्था के संपूर्ण अभिप्राय के प्रतीक के रूप में ठाकुर का कुआं है। उसके पास ही कुएं का रक्षण करने वाले स्वयं ठाकुर साहब हैं। कुएं की जगत के पास

बैठी हुई गंगी करीब से गुजरते हुए प्रेमचंद के विचार हैं और अंत में जोखू के सामने की विसंगतिपूर्ण नियति है।

'ठाकुर का कुआं' प्रेमचंदजी की एक ऐसी कहानी है, जिसमें दलित वर्ग की जीविका की समस्या का चित्रण हुआ है। प्राण को बचाए रखने के लिए अत्यंत जरूरी चीज पानी के लिए संघर्ष करने वाले दम्पत्ति गंगी और जोखू की कहानी ने जातिभेद की समस्या पर पाठकों के मन में जागरूकता उत्पन्न की है।

प्रेमचंद जी की 'कफन' कहानी हिन्दी की युगांतकारी कहानियों में गिनी जाती है। कहानी में घीसू और माधव दो प्रमुख पात्र हैं। दोनों पिता-पुत्र आलसी और कामचोर हैं। प्रेमचंद जी ने जिस गांव का जिक्र अपनी कहानी में किया है, उस गांव में चर्मकारों के कुनबे का चित्रण मिलता है। कहानी में दलित जीवन का यथार्थ चित्रण है। घीसू और माधव चर्मकार हैं और सार गांव में बदनाम हैं। माधव की पत्नी बुधिया बदकिस्मत दलित नारियों की प्रतीक है। भारतीय समाज में जहां मेहनती किसान हैं, वहां घीसू और माधव जैसे कामचोर, निर्दयी और निर्लज्ज चरित्र भी हैं। दोनों के आलसी होने के कारण रोजी-रोटी पाने में असमर्थ हैं। दोनों को बुधिया की चिंता नहीं है। बाप-बेटे का जीवन विचित्र है। कर्ज से लदे होने पर भी वे चिंताओं से मुक्त हैं। किसी के खेत से मटर, आलू लाकर भून कर खाते हैं। माधव की पत्नी बुधिया जब प्रसव वेदना से मर रही है, तब दोनों इसी इंतजार में हैं कि वह मर जाए तो दोनों आराम से सोएं। सबेरे तक बुधिया की मृत्यु हो जाती है। तब वह जमींदार के पास से जितने पैसे मिलते हैं, उससे बाजार में कफन खरीदने जाते है। लेकिन शराब की दुकान पर पहुंच जाते हैं, जहां जीवन में पहली बार पूरी बोतल शराब पाते हैं। उसके साथ तली हुई मछलियां, पूरियां आदि भरपेट खाकर बुधिया को आषीर्वाद देते हैं। एक जगह पर प्रेमचंद ने घीसू के मुख से कहलवाया है, "हां बेटा बैकुण्ठ में जाएगी। किसी को सताया नहीं, किसी को दबाया नहीं। मरते-मरते हमारी जिंदगी की सबसे बड़ी लालसा पूरी कर गई। वह न बैकुण्ठ में जाएगी तो क्या ये मोटे-मोटे लोग जाएंगे, जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं और अपने पाप को धोने के लिए गंगा में नहाते हैं और मंदिरों में जल चढ़ाते हैं।"4

इस अवतरण से स्पष्ट हो जाता है कि प्रेमचंद जी ने परम्परागत रूप से प्रचलित समाज व्यवस्था में सवर्ण हिन्दू लोगों के द्वारा दलितों के निर्धारित स्थान को दर्शाया है और उन्होंने घीसू को विचारवान व्यक्ति के रूप में लिया है।

इस प्रकार स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि प्रेमचंद जी ने दलितों के जीवन में व्याप्त भीषण स्थितियों का चित्रण अपने साहित्य में किया है। दलितों के दुःख-दर्द के प्रति जन्मी अपार मानवीय संवेदना उन्हें जीवन में समाहित अनेकानेक समस्याओं से निजात दिलाने की दिषा में गतिमान होती हुई पाठक को बेचैन कर देती है। ऐसा भी कहा जा सकता है कि सामंती मूल्यों की निर्मम टूटन का जबर्दस्त नमूना कफन कहानी में है।

इस प्रकार स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि प्रेमचंदजी ने अपनी कहानियों में उनकी आर्थिक, मानसिक स्थितियों का चित्रण और भेदभावपूर्ण

सामाजिक सांस्कृतिक ढांचे की सहज अभिव्यक्ति की है। प्रेमचंद जी अपने लेख 'हमारा कर्तव्य' में कहते हैं, "हमारा कर्तव्य तभी पूरा होा जब हम देष के वर्तमान अछूतपन को जड़मूल से नष्ट कर देंगे।"5 प्रेमचंद का मानना है कि वर्तमान समाज भेदभाव और वैषम्य से ग्रस्त है। इस दलित संबंधी वैषम्य के बारे में डा.बाबा साहब अम्बेडकर ने स्पष्ट कहा है, "जातिवाद के महारोग के विनाश से ही उसमें अपनी आजादी की रक्षा करने की शक्ति उत्पन्न होगी। उस शक्ति के अभाव में स्वराज्य का महल हिलता रहेगा।"6

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट हो जाता है कि जातिवाद वर्तमान समाज की मुख्य समस्या है। इसी संदर्भ में प्रेमचंद जी ने कहा है, "जिस राष्ट्रीयता का स्वप्न हम देख रहे हैं उसमें तो जन्मगत वर्णों की गंध तक न होगी। वह हमारे श्रमिकों और किसानों का साम्राज्य होगा, जिसमें न कोई ब्राह्मण होगा, न हरिजन, न कायस्थ न क्षत्रिय। उसमें सभी भारतवासी होंगे या सभी हरिजन होंगे।"7

इस प्रकार स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि प्रेमचंद जी के साहित्य में दलितों की स्थिति और उसमें उनकी चेतना को पाठक के सामने रखा।

सन्दर्भ

1 प्रेमचंद, ठाकुर का कुआं, सं. कथायात्रा, डा.आलोक गुप्ता, पृष्ठ 12

2 प्रेमचंद, ठाकुर का कुआं, सं. कथायात्रा, डा.आलोक गुप्ता, पृष्ठ 11

3 प्रेमचंद, ठाकुर का कुआं, सं. कथायात्रा, डा.आलोक गुप्ता, पृष्ठ 10

4 प्रेमचंद, कफन, सं. कथा द्वादषी, डा.विनीत गोस्वामी, प्रो.भंवरलाल गुर्जर, प्रो.आर.सी.पटेल पृष्ठ 30

5 प्रेमचंद, सामाजिक क्रांति के दस्तावेज भाग-1, सं. शंभूनाथ, पृष्ठ 527

6 डा.अम्बेडकर: सामाजिक क्रांति के दस्तावेज भाग-2, सं. शंभूनाथ, पृष्ठ 319

7 डा.अम्बेडकर: सामाजिक क्रांति के दस्तावेज भाग-1, सं. शंभूनाथ, पृष्ठ 549